स्वच्छ पर्यावरण, स्वच्छ भारत - हमारा कर्तव्य।

हमारे धरती खूब सारे विविधताओं से समृद्ध हूँ। यहाँ की पर्यावरण खूबसूरती के साथ अलग-अलग चीनों से अपना सौंदर्य फैलाती है। इस धरती की उत्पत्ति कई करोड़ों-साल पहले हुआ था। उस समय को पर्यावरण से आज की प्रकृती बहुत बदल गया है। एक पत्थर से पैदा हुआ इस धरती, आज अलग-अलग वनस्पतियों और पक्षि-जानवरों से समृध्य है। सालों चलाते, हमारे धरती की हालत और खराब हो रहा है। इस पर्यावरण हमारे माँ है। यहाँ रहने केलिए हमेंको सारे चीजों इस परिस्थिति में है। पर हम इंसानों इस पर्यावरण को और दूषण कर रहा है। हमें परिस्थिति को खयाल रखना चाहिए जैसा हमारे माँ की कठिनाई समय पर हम रखते हूँ। परिस्थिती हमारे ध्यान कैसे रखते हो, जैसे वापसी में हमको मिल देना चाहिए। हमें हमारे पर्यावरण को स्वच्छ रखना चाहिए ताकी हमको यहाँ शांती से जी सकते है।

आजकल हमारे प्रकृति की हालत देखों, सारे जगहों खूब ज्यादा कचरा है। पानी, जमीन, वायू, आवाज़

सारे की सारे खराब होगया। इस धरती की हालत देखकर हमारे आँखों से आंसू खुद ही आ रहा है। धरती की सारे जगहों से ज्यादा खराब हमारा भारत के पर्यावरण की है। क्यों? ये सवाल हमको, अपने आप को पूछना चाहिए। क्योंकि ये हम भारतवसियों का हि काम है।

हमारे पूर्वको का समय हरियाली से भरा हुआ था इस धरती। आज हम नई-नई प्रतियोगिता के पीचे जाकर जीतने वाले प्रकृती कि ध्यान देना भूल गयी। भारतीय संसृति की प्रथम लक्ष्य है पर्यावरण को समालना। भारतीय इतिहासों को देखकर हमें और पढना चाहिए क्योंकि इस ग्रंथ में हमे देख सकता है कैसे हमारा पूर्विकों समाज साँफ रखा है। हम रहनेवाले समाज और जगहों स्वच्छ बनाना हमारा कर्तव्य है। इस केलिए हमें हक लेना चाहिए।

यहाँ के समाज की ओर देखों, गाँवों से भी ज्यादा खचरा नागरिक जगहों में है। शेहरों में इस हालत होने का प्रथम कार्य है बडते हुए इंसानों की

जन-व्यापक। दुनिया में सबसे ज़्यादा लोग इस भारत में है। सालों के बाद चैना को हराकर हम भारतवासियों आगे चल रहा है। ये ~~एक~~ खुश देने कि बात नही है क्योंकि यहाँ कम स्थानसों है। सालों-साल भारत में हज़ारों बच्चों पैदा हो रहा है। इस तरह बड़ा रहे तो हम अचानक से एक गरीब राष्ट्र हो जाएगा। बड़ते रहे इस हालत तो यहाँ की प्राकृतिक चीज़ो की कमी हो जा सकते है। तब हम प्रयोगी की मदद से और इस जगह को चूषण करेगा। ~~के हमे~~ इस तरह करके रहे तो हमे वापसी में और बुरि अवस्ता हि होगा।

इस भारत की प्रथम उत्भव सांस्कृति है सिंधु-संस्कार। हारप्पन सांस्कारिकता नाम से भी ये मशहूर है। हमारा पूराने पूर्वि को इस संस्कृति को मानते आगे चलते थे। दुनिया की सारे संस्कृति को देखते भि तो इस तरह स्वच्छ और भविष्य की तरह नई तरीके बताने संस्कृति सिर्फ ये हि तो है। आर्य-वंश की जनताओं से उत्भव हुआ ये संस्कृति बहुत ही तरीकें बतानेवाले इस। बुद्धिबता के बाद में हमे तोड़ना काफी मुशकिल

होगा। हेरप्पन सांस्कारिकता के भाकी हुए चीज़ों को देखकर हमे पता चल सकता है कि कैसे स्वच्छ जगहों में वह रह चुका है। इस समय वहाँ नहाने की जगह, टाईलेट जैसे कई चीज़ों की बाकी अवशिष्ट मिल चुका है। इतने ज्यादा स्वच्छ में रहेकर हमारे पूर्विकों को आज की इस भारत की हालत देखते तो तब बहुत दुःख ज़रूर आऊगा। हमारे इस पीढी को क्या हुआ? ये तो एक सोचने वाले सवाल है।

समय चलाते-चलाते इंसानों और आलसी बना रहा है। इंसानों कोई भी चीज़ों को नही चोड़ रहा है। यहाँ के सारे चीज़ों एक दिन ज़रूर खतम हो जाएगा। तबही हम सीख सकते है आज करने की भविश्यत।

शहरों में एक गड़े से ज्यादा एक नही सकता है। वहा रुखा तो 86 सिगरेट एक साथ अंतर जाने की जैसा होगा। दूसरे वतन की लोगों को आज भारत एक खचरा डब्बा जैसे मानते है। इसका हालत होने की कारण हम तो है। सौ साल पेहले यहाँ की हालत से बिलकुल बदल गया है आज।

हरियाली से भरी भारत को आज काले पानी और बदबूदार जगह की तरह हम बदल दिया।

सबसे पेहले नदियों की हालत देखो, सारे कि सारे खचरा वहा है। नीले पानी के जगह आज तो वहा काला बदबूदार पानी है। फेकूटरियों की खचरा, पलास्टिक जैसे खचरें वहा डालकर ऐसा हुआ। हमारे धरती में 70% अक्सिजन समुद्र कि बनस्पतियों से मिल रहा है। ऐसा खचरा हम पानी में डाले तो हमे बहुत बड़ा कीमत देने पड़ेंगे। आकसिजन के बीना यहा रहने को सोच ही नहीं सकता है। ऐसा खचरा पानी में डाले तो समुद्र में रहनेवाले मछलियां जैसे जानवरें मर जाएँगे। इससे हमारे प्राकृतिक-संतुलन को बुरि तरह से प्रश्न हो जाता है। पानी में डालते विषचीजों उसमें फैलाकर सब ~~मृदा के बारे में कहते~~ जानवरें को नुकसान हो जाएंगे।

मृदा के बारे में कहते तो सबसे पेहला हमे कहना चाहिए ज़मीन में डालते हुए खचरे को। पलास्टिक ज़मीन पर डालदिया तो दस साल से भी ज्यादा

वह उस हालत में ही रहा होगा। ये मिट्टी के सविशेषताओं को खतम करेगा। और मिट्टी में डालते हुए पौधों के फैलाने वाले कीडनाशिनी से धरती को नुकसान पहुचेगी।

गाड़ियों से आते हुए आवाज़ और काले हवा, यहा की हवा और आवाज को खराब करेगा। और ज्यादा तरीके से हमारे समाज खराब है। इस हालत में यहा रहना हम सोच ही नही सकता है।

इस धरती को कई जगहों में ग्लोबल वार्मिंग के कारण बहुत ज्यादा गर्मी हो जाता है। ऐसा ही चले जाए तो यहा रहने को हम सोच भी नही सकेंगे। जहाँ हम रहते है उस जगह हमे स्वच्छ करना चाहिए। ये तो हमारा कर्तव्य है। इसकेलिए हम नई पीढी की बच्चों आगे चलकर शुरू करना चाहिए। आज बच्चों ये पर्यावरण को देखना नही चाहते है। बच्चों की दुनियाँ मोबैल फॉन में बंद हुआ है। और नई प्रौद्योगिकी के आने से हम और भी अलसी बन गया है।

इस प्रकृति को हम और ज्यादा चूषण करें तो आखरी में हमे माँ धरती जरूर ~~बाप~~ बदला देगा। धरती हमे बहुत माँफी दिया। पर हम दिनों से और नुकसान इस धरती को पहुचाँते है। और ज्यादा हो तो प्राकृतिक दुरन्त की तरह हमे बदला मिल सकते होंगे।

आज हमारे सामने बहुत वक्त है इस वयाविस्थ को बचाने केलिए। सिर्फ हमे तो कोशिश ही करना चाहिए।

परिस्थिति का स्वच्छ ना रखने से सुनामी, धरती गिरना, मिट्टी में डूबने जैसे बहुत सारे प्राकृतिक दुरन्त हमे सामना करना पडेंगें। कुछ समय पहले हुआ 'चूरलमला दुरन्द', २०१८ में हुआ प्रलय, और प्राकृतिक दुरन्द इसके वापसी है।

हमारा भारत को हमे स्वच्छ रखना चाहिए। इस-केलिए हमे आधुनिक प्रतियागिता यानी आर्टिफिशॅल इन्टलिजेंस्थ को मदद ले सकता है। हमें प्रतियागिता से अच्छे काम-कार्यों करना चाहिए। नही तो इस हालत में रहा तब हमें ~~बह~~ बहुत सारे बिमारियों जैसे कि - केनसर, श्वसन संबद्ध बिमारिया, ~~मल~~

गंदा पानी से मच्छरों से मलेरिया जैसा बहुत सारे बढ़ जायेंगा।

हमें हमारे समाज को साफ करने केलिए सबसे पहले हमें हमारे घरसे शुरू करना चाहिए। घर के प्रदेश साफ करें और पानी को न छोड़े। जैव कचरे, प्लास्टिक कचरे सब अलग अलग रखना चाहिए और प्लास्टिक को न जलाये। उसे हमे हरित-कर्म सेना को देना चाहिए। और ~~हमारे~~ बाहर जगहों में न फेंके। और इसे साफ रखना चाहिए। पानी में कोई कचरा नही डालना चाहिए और गाड़ी - इलेट्रिक में बदले। इस तरह हमारे समाज को एक स्वच्छ समाज बना सकते है।

हमको ~~हम~~ इस काम करवाने केलिए समाज में प्रधान जगहों जैसे कि स्कूलों में इसे इतना करने की आवश्यकता के बारे में बोधवत्कर देना चाहिए और नई कलबों को बनाकर एकसाथ साफ करना चाहिए।

इस समय हमे सरकार की स्वच्छ भारत

मिषन पर एक साथ आगे चलना चाहिए। और इस समय हमें एक हक लेना चाहिए –

" स्वच्छ भारत बनाना
हमारा कर्तव्य".

हमको हमारे हरियाली और खूबसूरत भारत को वापस लेना चाहिए। वायुमंडल, जल, मृदा सब साफँ और स्वच्छ रखना चाहिए। हमें नई टेकनोलजियों की मदद से ये करना आसान होगा।

एक अच्छा भारत, स्वच्छ भारत, नई भारत बनाओं। हमें देखने हमारे बच्चों सीख रहा है। तो आज से शुरु करें, तब नई पीढी को भि सिखाए। नई पीढी को एक अच्छा ज़मीन तोफा देना हमे चाहिए। ऐसा साँफ भारत हमारा सपना, यही काम मानकर आगे चलें।